6

—f"k ,oa Hkfe LokfeRo

भारत गांवों का देश है, यदि यह भी कहा जाए की भारत गांवों में निवास करता है तो अतिशयोक्ति न होगा। भारत देश की सम्पूर्ण जनसंख्या का लगभग 72 प्रतिशत (तीन चौथाई के लगभग) भाग अपनी जीविका के लिए कृषि तथा इससे सम्बन्धित क्रियाओं पर निर्भर करता है, इसलिए भारतीय गांवों के सन्दर्भ में कृषि एवं भूमि का विशेष महत्व है। ग्रामीण सामाजिक वर्गीकरण में भूमि और जाति ही वर्ग विशेष के पद, आर्थिक स्थिति, राजनैतिक प्रभाव और रहन–सहन के स्तर को निर्धारित करती हैं। सामाजिक स्तरीकरण में सर्वोच्च स्तर पर बड़ी जोतों या कास्त वाले भूस्वामी कृषक तथा सबसे नीचे स्तर पर खेतिहर श्रमिक तथा बंधुआ मजदूर आते हैं, जो अधिकांशतः आर्थिक व सामाजिक दृष्टि से पिछड़े होते है।

भूमि स्वामित्व व्यक्ति को अनेक प्रकार से अधिकार तथा सुविधाएं प्राप्त कराने में योगदान देता है 'देसाई' के अनुसार सभी प्रकार के आर्थिक स्त्रोतों से ग्रामीण समाज में भूमि सबसे बड़ी और महत्वपूर्ण पूँजी है, और कृषक के पास जितनी कम भूमि होती है, वह उतना ही निर्धन होता है। इसलिए भूमि स्वामित्व, कृषि व्यवसाय से सम्बन्धित व्यक्तियों के आर्थिक पक्ष और स्थिति का महत्वपूर्ण मापदण्ड है, अपितु भूमि स्वामित्व कृषक समाज में सामाजिक–आर्थिक स्थिति का महत्वपूर्ण निर्णायक कारक होता है (ए0आर0देसाईः1978ः287)। ड्यूमा के शब्दों में भूमि सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथा मान्यताएं प्राप्त सम्पत्ति है जो दूसरे व्यक्तियों पर सत्ता एवं शक्ति से घनिष्ठ सम्बन्ध रखती है एवं सामाजिक स्थिति को प्रभावित करती है। (ड्यूमा :1966ः156)। ड्यूमा के अनुसार राज्य, क्षेत्र शक्ति एवं सत्ता तथा ग्रामीण प्रभुत्व इत्यादि सभी भूमि स्वामित्व, से उत्पन्न होते हैं (ड्यूमा :1966ः153)। देसाई ने कृषि को भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था की धुरी तथा भूमि को कृषि उत्पादन के अत्यन्त महत्वपूर्ण साधन के रूप में स्वीकार करते हुए यह विचार व्यक्त किया गया है कि भारतीय ग्रामीण समाज के विभिन्न समूहों के मध्य जो संघर्ष हुए हैं वे मुख्य रूप से भूमि स्वामित्व के चारो ओर घूमते रहे हैं (ए0आर0देसाई :1978)। 'एम0एन0 श्रीनिवास' के अनुसार ग्रामीण जीवन के प्रतिमान प्रायः 'भूमि' जो कि धन तथा सम्पदा का महत्वपूर्ण स्त्रोत है, पर आधारिक होते है। उन गांवों में भी जिनमें व्यापारिक तथा शिल्पकारी जातियों का प्रभुत्व होता है, भूमि ही ग्रामीण सम्पन्नता का प्रमुख आधार होता है, और सिंचित भूमि अमूल्य वस्तु समझी जाती है (एम0एन0 श्री निवासः1980ः38)। यही नही भूमि स्वामित्व राजनैतिक सत्ता एवं शक्ति का प्रमुख आधार है। अनेक भारतीय या विदेशी समाज वैज्ञानिकों ने ग्रामीण समाज में व्यक्ति के लिए भूमि के महत्व को भली प्रकार दर्शाने की चेष्टा की है। इन समाज वैज्ञानिको में 'कोत्व तथा ब्रुनर' (1952), नेत्सन (1955), दूबे (1955), वरट्रेन्ड (1958), वेली (1958), विते (1969), सिंह (1980) तथा श्रीनिवास (1980) के नाम उल्लेखनीय है।

अनुसूचितजाति एवं पिछड़ीजाति के अधिकांश लोग ग्रामीण समुदाय में प्रायः किरायेदार अथवा कृषक मजदूर के रूप में कार्य करते थे। और आर्थिक दृष्टिकोण से भी हमेशा असुरक्षित रहा करते थे। ल्यूविन का विचार है कि किरायेदारों तथा कृषक मजदूरों की असुरक्षा का भूमि तथा कृषि सम्बन्धों पर अत्याधिक अवांछनीय प्रभाव पड़ता है (ल्यूविन :1951:467–475)। यदि अनुसूचितजातियों के पास कुछ भूमि होती थी तो भूमि का आकार बहुत छोटा होता था। इस तथ्य की पुष्टि फुच् (1950), मुन्द्रा तथा बाथम (1961) एवं अग्रवाल (1972) के अध्ययनों से होती है। बेली, हट्टन, श्रीनिवास तथा योगेन्द्र सिंह के अनुसार परम्परागत भारतीय समाज में अधिकांश कृषि मजदूरी करने वाले व्यक्ति अनुसूचितजाति के होते थे और वे प्रायः बन्धुआ मजदूर के रूप में कार्य करते थे (वेली :1958:209–220, हट्टन जे0एच0 :1963:207, श्रीनिवास :1980:15, सिंह 1980:30–32) सामाजिक स्तरीकरण के सन्दर्भ में जाति एवं भूमि स्वामित्व के सहसम्बन्ध ड्यूमा के विचार से विशेष महत्वपूर्ण है। ड्यूमा के अनुसार संक्षेप में दो प्रकार की जातियां है।, एक वे जिनके पास अधिक भूमि होती है तथा दूसरे वे जिनके पास अल्प भूमि या भूमि नही होती है। प्रायः प्रत्येक गांव में अधिकांश भूमि किसी एक ही जाति के सदस्य के पास होती है इसलिए यह जाति प्रभुत्व आदि के रूप में जानी जाती है। प्रायः इन जाति के लोगों का अधिक शक्ति पर अधिपत्य होता है और ये प्रभू जाति के रूप में उपजीविका साधनों और राजनैतिक सत्ता को नियन्त्रित करती है (ड्यूमा :1966:106)। परम्परागत जातीय श्रंखलात्मक व्यवस्था के अन्तर्गत अस्पृस्य अथवा अनुसूचितजाति के लोगों को प्रायः भूमि स्वामित्व के रूप में सम्पत्ति बनाने का अधिकार था। मनु द्वारा बनायी गयी रूढ़ियों पर आधारित नियमों के अन्तर्गत उन्हे धनहीन अथवा सम्पत्ति के बगैर ही रहने पर बाध्य किया जाता था। न तो वे भूमि खरीद सकते थे और न ही इसके स्वामी हो सकते थे (वोरेल :1968:99)। 'काने' के अनुसार शूद्र केवल हल चलाने तथा निम्न सेवा करने के लिए ही थे (पी0वी0 काने : भाग–2 : पेपर :35)।

देसाई के अनुसार ग्रामीण समुदाय में धन का परिणाम मुख्य रूप से कृषि पर और अन्तिम विश्लेषण में उनकी कृषि तकनीकी पर निर्भर है जो उसमें प्रयुक्त होती है। क्योंकि जितनी ऊंची तकनीकी होगी उतना ही अधिक कृषि उत्पादन होगा (देसाई :1978)। परम्परागत ग्रामीण समाज में देशी हल, फावड़ा, कूंदाल तथा बैल कृषि साधन के रूप में थे। सिंचाई के लिए कुओं से रहट द्वारा, तालाबों तथा पोखरों का पानी शारीरिक श्रम अन्य पशुओं के प्रयुक्त कर कच्ची नालियों द्वारा खेतों में पहुँचाया जाता था। आधुनिक रासायनिक उर्वरक एवं उन्नतशील बीजों का आभाव था और कीटनाशक दवाएं भी उपलब्ध नही थी। यही नही फसलों की रक्षा के लिए प्राकृतिक आपदाओं तथा मौसम की पूर्ण जानकारी देने वाले न तो वैज्ञानिक तन्त्र उपलब्ध थे न ही कृषि कार्यों के लिए आधुनिक कृषि यन्त्रों का प्रचलन था।

वर्तमान इस आधुनिक युग में भूमि स्वामित्व के महत्व को दृष्टिगत रखते हुए सरकार ने अनुसूचितजातियों अथवा भूमिहीनों की सामाजिक, आर्थिक दशा को सुधारने के लिए, भूमिहीनों को भूमि उपलब्ध कराने सम्बन्धी कई योजनाएं बनायी है। तथा इन योजनाओं का क्रियान्वयन कर भूमिहीनों को भूमि स्वामित्व प्राप्त हो रहा है। फलस्वरूप ये लोग कृषि करके तथा कृषि सम्बन्धी अन्य कार्यों को करके व्यक्तिगत भूसम्पत्ति तथा अपनी आर्थिक स्थिति को उच्च तथा अग्रसर करने का प्रयास कर रहे है। यद्यपि थोड़ी ही सही, किन्तु भूमि स्वामित्व एक ऐसा साधन है जो अनुसूचितजातियों के लोगों अथवा भूमिहीनों में नयी आशाएं एवं महत्वकांक्षाए उत्पन्न करके सामाजिक समानताओं तथा अन्याय से उन्हें मुक्ति दिलाने में सहायक सिद्ध हो सकता है। सर्वे की रिपोर्ट के अनुसार अनुसूचितजातियों में अपेक्षाकृत उच्चजातियों की भूमिहीनता अधिक प्रतिबिम्बित होती है। सरकार द्वारा बनायी गयी योजनाओं के फलस्वरूप कुछ लोगों को पट्टा अनुदान के तहत भूमि प्राप्त हुई है तथा कुछ व्यक्ति जो किराये पर भूमि लेकर कृषि करते थे उन्होने आर्थिक स्थिति को सुदृण कर भूमि खरीदी है। कुछ लोगों के भूमि सीमा निर्धारण तथा किरायेदारी समाधान अवरोध नियमों से लाभ पहुंचा है और कुछ लोगों के पास अपनी भूमि जो गिरवीं अथवा दूसरों के कब्जे में थी, प्राप्त हो गयी है तथा हो रही है। यद्यपि सरकार द्वारा यह प्रयास लगभग चार दषकों से अधिक समय से किये जा रहे है।, परन्तु मिश्रा, एस0एन0 तथा विद्यार्थी एल0पी0 (1977) हीरामनी ए0वी0 (1977)तथा मुमताज अली खां (1980) के अध्ययनों से परिलक्षित होता है की भूमिहीनों अथवा अनुसूचितजातियों से पास अभी भी भूमि कम है।

उपरोक्त विवेचना से स्पष्ट है तथा कई एक विद्धानों ने ग्रामीण समाज में कृषि एवं भूमि स्वामित्व से सम्बन्धित पक्षों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है। प्रस्तुत अध्ययन में कृषि एवं भूमि स्वामित्व सम्बन्धी संरचना का अध्ययन किया गया है। सम्पूर्ण अध्ययन को चार भागों में विभक्त किया गया है।

(अ) भूमि स्वामित्व प्रतिमान।
(ब) भूमि का क्रय विक्रय।
(स) कृषि का आधुनिकीकरण।
(द) कृषि में दूरदर्शन की उपयोगिता।

¼v½ % Hkfe LokfeRo çfreku

वर्तमान अध्ययन के प्रस्तुत खण्ड में चारों ग्रामसभाओं के परिवारों में से अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं के परिवारों के भूमि स्वामित्व सम्बन्धी प्रतिमानों का विश्लेषण किया गया है। भूमि स्वामित्व प्रतिमान के अन्तर्गत कुल पारिवारिक भूमि, पैतृक भूमि, खरीदी गयी भूमि, तथा कुल पारिवारिक भूमि में से कृषि योग्य भूमि तथा पूर्ण सिंचित भूमि के अनुपात तथा

किराये की भूमि को महत्वपूर्ण पक्ष माना गया है, और इन्ही पक्षों पर प्रकाश डालने की चेष्टा की गयी है।

6-1 % ikfjokfjd Hkfe

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं से प्राप्त तथ्यों से यह विदित होता है कि 78.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास अपनी पारिवारिक भूमि है, 21.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास कोई भूमि नही है। इन्हे भूमिहीनों की श्रेणी में रखा गया है। अतः स्पष्ट है कि अध्ययन में तीन चौथाई से ज्यादा उत्तरदाताओं के पास अपनी भूमि है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 6.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 6-1 % mÙkjnkrkvksa dh ikfjokfjd Hkfe:–

ikfjokfjd Hkfe	vkofRr	ifr'kr
हाँ	180	78.3
नही	50	21.7
योग	230	100.0

6-1-1 % lkekftd ifjoR;Z ,oa ikfjokfjd Hkfe

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं के भूमि स्वामित्व पर उनके सामाजिक परिवर्त्य का प्रभाव देखने के लिए संकलित तथ्यों को विश्लेषित कर सारिणी 6.1.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

vk;q

वर्तमान अध्ययन में आयु के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि युवा आयु समूह के 73.2 प्रतिशत, मध्यम आयु समूह के 76.9 प्रतिशत वृद्ध आयु समूह के 90.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास अपनी भूमि है। युवा आयु समूह के 26.8 प्रतिशत, मध्यम आयु समूह के 23.1 प्रतिशत, वृद्ध आयु समूह के 9.1 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास अपनी निजी भूमि नही है।

f'kf{kk

वर्तमान अध्ययन में शिक्षा के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि अशिक्षित वर्ग के 70.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास भूमि है, 29.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास भूमि नही है। प्राइमरी/जूनियर षिक्षा वर्ग के 83.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास भूमि है। 16.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास भूमि नही है। हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट षिक्षा वर्ग के 76.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास भूमि है, 23.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास भूमि नही है। स्नातक/स्नातकोत्तर वर्ग के 74.1 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास भूमि है, 25.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास भूमि नही है।

tkfr

वर्तमान अध्ययन में जाति के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि उच्चजाति के 88.1 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास भूमि है तथा शेष 11.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास भूमि नही है। पिछड़ीजाति के 91.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास भूमि है तथा 8.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास भूमि नही है। अनुसूचितजाति के 64.2 प्रतिशत के पास भूमि है तथा शेष 35.8 प्रतिशत के पास भूमि नही है।

अतः स्पष्ट है कि पारिवारिक भूमि स्वामित्व प्रतिमान पर सामाजिक परिवर्त्यों का धनात्मक प्रभाव पड़ता परिलाक्षित है। उपरोक्त विश्लेषित तथ्यों का क्रमबद्ध वर्णन सारिणी 6.1.1 में किया गया है।

6-2 % ir'd Hkfe

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं से यह पूंछा गया कि आपके पास पैतृक भूमि के रूप में कितनी भूमि है ? प्राप्त तथ्यों से यह विदित होता है कि 0.1 से 1.2501 हेक्टेयर तक भूमि 57.2 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास 1.2501 से 2.0835 तक भूमि 21.1 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास तथा 2.0835 हेक्टेयर तक भूमि 21.7 उत्तरदाताओं के पास है। अतः यह कहा जा सकता है कि लगभग आधे उत्तरदाताओं के पास पर्याप्त मात्रा में भूमि नही है। कुछ लोगों के पास ही पर्याप्त मात्रा में भूमि है। उपर्युक्त तथ्यों का क्रमबद्ध वर्णन सारिणी 6.2 में किया गया है।

lkfj.kh 6-1-1 lkekftd ifjoR;l ,o ikfjokfjd Hkfe

lkekftd ifjoR;l	gk|	Ukgh	;kx
vk;|			
20–35	90 73.2	33 26.8	123 100.0
36–50	40 76.9	12 23.1	52 100.0
51 से ऊपर	50 90.9	5 9.1	55 100.0
f'k{kk			
अशिक्षित	29 70.7	12 29.3	41 100.0
प्राइमरी / जूनियर	86 83.5	17 16.5	103 100.0
हाईस्कूल / इण्टरमीडिएट	45 76.3	14 23.7	59 100.0
स्नातक / स्नातकोत्तर	20 74.1	7 25.9	27 100.0
tkfr			
उच्चजाति	37 88.1	5 11.9	42 100.0
पिछड़ीजाति	75 91.5	7 8.5	82 100.0
अनुसूचितजाति	68 64.2	38 35.8	106 100.0
योग	180 78.3	50 21.7	230 100.0

lkfj.kh 6-2 % mÙkjnkrkvks d ikl i`rd Hkfe%&

Hkfe dh ek=k ¼gDV;j e½	vkofRr	ifr'kr
0.01 – 1.2501 हेक्टेयर	103	57.2
1.2501 – 2.0835 हेक्टेयर	38	21.1
2.0835 हेक्टेयर से अधिक	39	21.7
योग	180	100.0

6-3 % —f"k ;kX; Hkfe

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं से उनके परिवार के पास निजी भूमि में से कृषि योग्य भूमि बताने के लिए कहा गया। कृषि योग्य भूमि का तात्पर्य उस भूमि से लगाया गया है, जो समतल तथा दोमट मिट्टी की है और जिसमें कम से कम दो फसलें होती है। इसके विश्लेषण के लिए कुल भूमि में से प्रतिशत के रूप में कृषि योग्य भूमि का अनुपात निकाला गया है। प्राप्त तथ्यों के विदित होता कि 0.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं की भूमि में केवल 1 से 25 प्रतिशत भूमि कृषि योग्य है, 5.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं की भूमि में से केवल 26 से 50 प्रतिशत भूमि कृषि योग्य है, 8.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं की भूमि में से केवल 51 से 75 प्रतिशत भूमि कृषि योग्य है, 84.4 प्रतिशत उत्तरदाताओं की भूमि में से केवल 76 से 100 प्रतिशत भूमि कृषि योग्य है तथा 1.1 प्रतिशत उत्तरदाताओं की भूमि कृषि योग्य नही है। उपर्युक्त तथ्यों का क्रमबद्ध वर्णन सारिणी 6.3 में किया गया है।

lkfj.kh 6-3 % mÙkjnkrkvks dh —f"k ;kX; Hkfe

d`f"k ;kX; Hkfe	vkofRr	ifr'kr
1 – 25 प्रतिशत	1	0.6
26– 50 प्रतिशत	10	5.6
51 – 75 प्रतिशत	15	8.3
76 – 100 प्रतिशत	152	84.4
कृषि योग्य भूमि नही	2	1.1
योग	180	100.0

6-3-1 % i.k flfpr Hkfe

पूर्ण सिंचित भूमि उस भूमि को माना गया है जिसमें हर मौसम में सिचाई के लिए कुंआ, पम्पिग सेट (बोरिंग), बिजली मोटर (ट्यूवबेल), समरसीवल, नहर के पानी की सुविधा उपलब्ध है। वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं से यह पूंछा गया कि आपकी सम्पूर्ण भूमि में कितनी भूमि सिंचित है और कितनी असिंचित भूमि है। प्राप्त तथ्यों से यह विदित होता है। कि 0.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं की भूमि 1–25 प्रतिशत पूर्ण सिंचित है। 1.1 प्रतिशत उत्तरदाताओं की भूमि 26–50 प्रतिशत तक सिंचित है, 1.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं की भूमि 51–75 प्रतिशत तक सिंचित है, 96.1 प्रतिशत उत्तरदाताओं की 76–100 प्रतिशत तक भूमि सिंचित है केवल 0.6 प्रतिशत उत्तरदाता की भूमि बंजर है। जहां पर सिचाई के लिए कोई साधन नही है। उपर्युक्त तथ्यों को क्रमबद्ध सारिणी 6.3.1 में वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 6-3-1 % mÙkjnkrkvksa dh i.k flfpr Hkfe

flfpr Hkfe	vkofRr	ifr'kr
1 – 25 प्रतिशत	1	0.6
26– 50 प्रतिशत	2	1.1
51 – 75 प्रतिशत	3	1.6
76 – 100 प्रतिशत	173	96.1
बंजर भूमि	1	0.6
योग	180	100.0

6-4 % –f"k d fy, fdjk;s dh Hkfe yuk

ग्रामीण समुदाय में निवास करने वाला कृषक उत्तरदाता जो बहुधा बहुत ही मेहनती होता है उनमें कुछ ही को छोड़ कर लगभग सभी के पास भूमि बहुत कम होती है। ऐसे में यह कृषक कुछ किराये की भूमि लेते है तथा उसमें परिश्रम करके फसल पैदा करते है, और

मुनाफा का कुछ भाग किराये के रूप में भूमि मालिक को देते है और बाकी का हिस्सा अपने लिए रखते है, किरायें की भूमि ज्यादातर बड़ी जोत वाले भूमिधरों (भूमि मालिकों) से लेते है तथा जो मजदूर वर्ग है वह अपने परिश्रम से अन्य काम भी करते है। उत्तरदाताओं से यह पूंछा गया कि क्या आप कृषि के लिए किराये पर भूमि लेते है ? प्राप्त तथ्यों से यह विदित होता है कि 40.0 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि के लिए किराये पर भूमि लेते है, तथा 60.0 प्रतिशत उत्तरदाता किराये के लिए भूमि नही लेते है, अतः स्पष्ट है कि कृषि के लिए एक चौथाई से ज्यादा उत्तरदाता किराये पर भूमि लेते है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 6.4 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 6-4 mÙkjnkrkvk dk fdjk;s ij Hkfe yuk

fdjk;s dh Hkfe yuk	*vko`fRr*	*izfr'kr*
हाँ	92	40.0
नही	138	60.0
योग	230	100.0

6-4-1 % lkekftd ifjoR;! ,o —f'k d! fy, fdjk, ij Hkfe yuk

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं द्वारा कृषि के लिए किराये की भूमि लेने पर सामाजिक परिवर्त्यों का प्रभाव देखने के लिए उत्तरदाताओं से संकलित तथ्यों को विश्लेषित कर सारिणी 6.4.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

vk;q

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि युवा आयु समूह के 44.7 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि के लिए किराये की भूमि लेते हैं, 55.3 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि के लिए किराये पर भूमि नही लेते है। मध्यम आयु समूह के 48.1 प्रतिषत उत्तरदाता कृषि के लिए किराए पर भूमि लेते है, 51.9 प्रतिशत उत्तरदाता कृ षि के लिए किराये पर भूमि नही लेते है। वृद्ध आयु समूह के 21.8 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि के लिए किराए पर भूमि लेते हैं, 78.2 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि के लिए किराये पर भूमि नही लेते है। अतः यह स्पष्ट होता है कि युवा आयु समूह के उत्तरदाता कृषि के लिए किराये पर भूमि लेने में अग्रणी है।

f'kf{kk

वर्तमान अध्ययन मे उत्तरदाताओं की शिक्षा के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि अशिक्षित वर्ग के 36.6 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि के लिए किराये पर भूमि लेते है, 63.4 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि के लिए किराये पर भूमि नही लेते है। प्राइमरी/जूनियर वर्ग के 51.5 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि के लिए किराये पर भूमि लेते है, 48.5 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि के लिए किराये पर भूमि नही लेते है, हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट षिक्षा वर्ग के 28.8 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि के लिए किराये पर भूमि लेते है, 71.2 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि के लिए किराये पर भूमि नही लेते है, स्नातक/स्नातकोत्तर वर्ग के 25.9 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि के लिए किराये पर भूमि लेते है, 74.1 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि के लिए किराये पर भूमि नही लेते है।

tkfr

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की जाति के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि उच्चजाति वर्ग के 23.8 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि के लिए किराये पर भूमि लिये है, 76.2 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि के लिए किराये पर भूमि नही लिये है, पिछड़ीजाति वर्ग के 45.1 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि लिए किराये पर भूमि लिये है, 54.9 प्रतिषत उत्तरदाता कृषि के लिए किराये पर भूमि नही लिये है, अनुसूचितजाति के 42.5 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि के लिए किराये पर भूमि लिये है, 57.5 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि के लिए किराये पर भूमि नही लिये है। उत्तरदाताओं द्वारा कृषि के लिए किराये पर भूमि लेने पर सामाजिक परिवर्त्यों का प्रभाव धनात्मक प्रतीत होता है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 6.4.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

6-4-2 % fdjk;s ij Hkfe ysus dh ek=k

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं से पूंछा गया कि कृषि के लिए वे कितनी भूमि किराये पर लेते है। प्राप्त तथ्यों से विदित होता है कि 67.4 प्रतिशत उत्तरदाता केवल 0.01–1.0 हेक्टेयर तक भूमि किराये पर लेते है, 30.4 प्रतिशत उत्तरदाता 1.1–2.0 हेक्टेयर तक भूमि किराये पर लेते है, 2.2 प्रतिशत उत्तरदाता 2.1 हेक्टेयर से ऊपर भूमि किराये पर लेते है। अतः स्पष्ट है कि आधे से अधिक उत्तरदाता 0.01–2.5 हेक्टेयर तक भूमि कृषि करने के लिए किराये पर लेते है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 6.4.2 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 6-4-1 % lkekftd ifjoR;l ,o —f"k d fy, fdjk; dh Hkkfe yuk

lkekftd ifjoR;l	gk	ugh	;kx
vk;			
20—35	55 44.7	68 55.3	123 100.0
36—50	25 48.1	27 51.9	52 100.0
51 से ऊपर	12 21.8	43 78.2	55 100.0
f'k{kk			
अशिक्षित	15 36.6	26 63.4	41 100.0
प्राइमरी / जूनियर	53 51.5	50 48.5	103 100.0
हाईस्कूल / इण्टरमीडिएट	17 28.8	42 71.2	59 100.0
स्नातक / स्नातकोत्तर	7 25.9	20 74.1	27 100.0
Tkkfr			
उच्चजाति	10 23.8	32 76.2	42 100.0
पिछड़ीजाति	37 45.1	45 54.9	82 100.0
अनुसूचितजाति	45 42.5	61 57.5	106 100.0
योग	92 40.0	138 60.0	230 100.0

lkfj.kh % 6-4-2 % mRrjnkrkvk }kjk fdjk, ij Hkfe yu dh ek=k

Hkfe yuk ¼gDV;j e½	vkofRr	ifr'kr
0.01 – 1.0 हेक्टेयर	62	67.4
1.1 – 2.0 हेक्टेयर	28	30.4
2.1 हेक्टेयर से ऊपर	2	2.2
योग	92	100.0

6-4-3 % fdjk; ij Hkfe yu dh vof/k

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं से यह पूंछा गया कि कृषि करने के लिए कितने वर्ष से भूमि किराये पर लेते आ रहे हैं, प्राप्त तथ्यों से यह विदित होता है कि 7.6 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि के लिए किराये की भूमि 1–2 वर्ष से लेते आ रहे है।, 76.1 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि के लिए किराये की भूमि 3–4 वर्ष से लेते आ रहे है, 16.3 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि के लिए किराये की भूमि 5 वर्ष से ऊपर से लेते आ रहे है। अतः स्पष्ट है कि तीन चौथाई से अधिक उत्तरदाताओं के भूमि लेने की अवधि 3–4 वर्ष के बीच की है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 6.4.3 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 6-4-3 % mÙkjnkrkvk d }kjk fdjk; ij Hkfe yu dh vof/k

o"k	vkofRr	ifr'kr
1–2	7	7.6
3–4	70	76.1
5 वर्ष से ऊपर	15	16.3
योग	92	100.0

6-4-4 % fdjk; dh Hkfe dk okf"kd fdjk;k

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं से पूंछा गया कि वे कृषि के लिए जो भूमि किराए पर लेते है। उसका वार्षिक किराया कितना व किस हिसाब से देते है। प्राप्त तथ्यों से विदित होता है कि 19.5 प्रतिषत उत्तरदाता किराये की भूमि का वार्षिक किराया 12000 रूपया प्रति हेक्टेयर

के हिसाब से देते है। 59.8 प्रतिशत उत्तरदाता किराये की भूमि का वार्षिक किराया 12001–18000 रूपया प्रति हेक्टेयर के हिसाब से देते है, केवल 20.7 प्रतिशत उत्तरदाता किराये की भूमि का वार्षिक किराया उपज का आधा हिस्सा देकर वार्षिक किराया अदा करते है। अतः कहा जा सकता है की भूमि की उर्वरा शक्ति के अनुसार किराया तय किया जाता है तथा किराया दिया जाता है।

fo'k"k %&

किराये की कृषि भूमि का किराया उपज का आधा हिस्सा देना बटाई पर कृषि भूमि लेना कहलाता है। जिसमें कृषि भूमि की जुताई, बीज, कृषि भूमि पर वर्ष भर मजदूरी का खर्च बटाईदार (किराये पर भूमि लेने वाला) करता है। सिंचाई, रासायनिक खाद, कीटनाशक दवा, व अन्य समझौते के अनुसार खर्चों का आधा रूपया कृषि भूमि मालिक देता है। जिसके उपरान्त पूरे वर्ष में जितनी भी फसलें होती है। शर्तें सभी पर लागू होती है। समझौते के फलस्वरूप उपजों का आधा हिस्सा कृषि भूमि मालिक तथा आधा हिस्सा बटाईदार (किराये की कृषि भूमि लेने वाला) प्राप्त करता है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 6.4.4 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 6-4-4 mUkjnkrkvksa }kjk –f"k Hkfe dk okf"kd fdjk;k fn;k tkuk

okf"kd fdjk;k ¼:i;k e½	*vkofRr*	*izfr'kr*
12000 तक	18	19.5
12001 – 18000	55	59.8
उपजों का आधा हिस्सा	19	20.7
योग	92	100.0

c&–f"k Hkfe dk Ø;oØ;

वर्तमान अध्ययन में कृषि भूमि के क्रय–विक्रय से सम्बन्धित तथ्यों का विश्लेषण किया गया है। इस सन्दर्भ में मुख्य रूप से परिवार द्वारा व स्वयं खरीदी गयी, बेची गयी, कृषि भूमि क्रय–विक्रय करने वालों की जाति क्रय की गयी भूमि का स्थान व अन्य कारक जिसके वशीभूत होकर कृषि भूमि का विक्रय किया गया है का विश्लेषण प्रस्तुत खण्ड में किया गया है।

6-5 % [kjhnh x;h Hkwfe@—f"k Hkwfe

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं से पूंछा गया है कि आपके परिवार व आपके द्वारा कितनी भूमि/कृषि भूमि खरीदी गयी है। प्राप्त तथ्यों से विदित होता है कि 4.8 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार व स्वयं द्वारा 0.01–1.0 हेक्टेयर तक भूमि खरीदी गयी है, 2.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं के द्वारा व उनके परिवार के द्वारा 1.1–2.0 हेक्टेयर तक भूमि खरीदी गयी है, 1.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं के द्वारा व उनके परिवार के द्वारा 2.1 हेक्टेयर से ज्यादा भूमि की खरीद्दारी हुई है तथा 91.3 प्रतिषत उत्तरदाताओं व उनके परिवार में किसी भी प्रकार की भूमि नही खरीदी गई है। अतः स्पष्ट है कि कुछ उत्तरदाताओं व उत्तरदाताओं के परिवार द्वारा 0.01–1.0 हेक्टेयर भूमि की खरीददारी की गयी है। उपरोक्त तथ्यों को सारिणी 6.5 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 6-5 mÙkjnkrkvksa o ifjokj }kjk [kjhnh x;h Hkwfe@—f"k Hkwfe

[kjhnh xbZ Hkwfe ¼d`f"k Hkwfe gsDVs;j esa½	vkofÙkr	ifr'kr
0.01 – 1.0	11	4.8
1.1 – 2.0	6	2.6
2.1 से ऊपर	3	1.3
भूमि नही खरीदी गई है	210	91.3
योग	230	100.0

6-5-1 % Hkwfe@—f"k cspus okyksa dh tkfr

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं से यह पूंछा गया कि आपने किस जाति के लोगों से भूमि/कृषि भूमि खरीदी है ? प्राप्त तथ्यों से विदित होता है कि 20.0 प्रतिशत भूमि विक्रय करने वाले उत्तरदाता उच्चजाति से,45.0 प्रतिशत भूमि विक्रय करने वाले उत्तरदाता पिछड़ीजाति से, 35.0 प्रतिशत भूमि विक्रय करने वाले अनुसूचितजाति के थे। जो कि उदीयमान नवीन आकांक्षाओं की उत्पत्ति के फलस्वरूप बिगड़ी आर्थिक स्थिति के कारण भूमि/कृषि भूमि को बेंचे है। अतः यह कहा जा सकता है पिछड़ीजाति के उत्तरदाताओं द्वारा अधिक भूमि/कृषि भूमि को बेंचा गया है। उपरोक्त तथ्यों का क्रमबद्ध वर्णन सारिणी 6.5.1 में किया गया है।

lkfj.kh 6-5-1 % Hkfe@—f"k Hkfe foØ; dju oky mÙkjnkrkvk dk tkfr

Tkfr	*vkofRr*	*ifr'kr*
उच्चजाति	4	20.0
पिछड़ीजाति	9	45.0
अनुसूचितजाति	7	35.0
योग	20	100.0

6-5-2 % Hkfe@—f"k Hkfe [kjhnu dk LFkku

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं से यह पूंछा गया कि आप ने किन–किन स्थानों पर भूमि/कृषि भूमि खरीदी है ? प्राप्त तथ्यों से विदित होता है कि 55.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अपने ही गांव में भूमि/कृषि भूमि खरीदी है, 25.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अपने गांव से जुड़े दूसरे गांव में भूमि/कृषि भूमि खरीदी है, तथा 20.0 प्रतिशत उत्तरदाताओं नें शहर व जनपद के ब्लाकों में भूमि/कृषि भूमि खरीदी है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 6.5.2 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 6-5-2 % mÙkjnkrkvk }kjk Hkfe [kjhnu dk LFkku

LFkku	*vkofRr*	*ifr'kr*
अपने ही गांव में	11	55.0
अपनी ग्रामसभा से जुड़ी दूसरी ग्रामसभा में	5	25.0
शहर में/जनपद के किसी अन्य ब्लाकों में	4	20.0
योग	20	100.0

6-6 % —f"k Hkfe [kjhnu d lk/ku

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं से यह पूंछा गया कि आपको भूमि/कृषि भूमि खरीदने के लिए धन किन साधनों से प्राप्त होता है ? प्राप्त तथ्यों से विदित होता है कि 45.0 प्रतिशत उत्तरदाता (चल/अचल सम्पत्ति के विक्रय, कर्ज, पुस्तैनी धन) अन्य साधनों के तहत भूमि/कृषि भूमि को खरीदे हैं, 40.0 प्रतिशत उत्तरदाता घर के कमाने वालों के धन से भूमि/कृषि भूमि को खरीदते है, 15.0 उत्तरदाता अपनी वार्षिक बचत से भूमि/कृषि भूमि की खरीदे हैं। अतः स्पष्ट है कि अधिकतर उत्तरदाता चल/अचल सम्पत्ति विक्रय, या कर्ज, या

पुस्तैनी धन, गिरवी रखकर, भूमि को खरीदते हैं उपर्युक्त तथ्यों का क्रमबद्ध वर्णन सारिणी 6.6 में किया गया है।

lkfj.kh 6-6 mÙkjnkrkvksa dh Hkwfe@—f"k Hkwfe [kjhnus dk lk/ku

lk/ku	*vkofRr*	*izfr'kr*
वार्षिक बचत	3	15.0
घर के कमाने वालों के धन से	8	40.0
चल/अचल सम्पत्ति के विक्रय कर्ज, पुस्तैनी धन गिरवी या अन्य	9	45.0
योग	20	100.0

6-7 ½ mÙkjnkrkvksa ds ifjokj }kjk csph x;h Hkwfe@—f"k Hkwfe

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं से यह पूंछा गया कि आपके परिवार द्वारा पिछले 10 वर्षों में कितनी भूमि बेंची गयी है। प्राप्त तथ्यों से विदित होता है कि 5.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में 0.01–4230 एयर तक भूमि बेची गयी है। 3.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में 4231–08460 एयर तक भूमि बेची गयी है, तथा 2.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार में 8461 एयर से ऊपर अधिक भूमि बेची गयी है। अतः स्पष्ट है कि लगभग कुछ उत्तरदाताओं के परिवार में 0.01–4230 एयर तक भूमि/कृषि भूमि बेची गयी है। उपर्युक्त तथ्यों का क्रमबद्ध वर्णन सारिणी 6.7 में किया गया है।

lkfj.kh 6-7 mÙkjnkrkvksa ds ifjokj }kjk csph x;h Hkwfe@—f"k Hkwfe

Hkwfe dh ek=k ¼,;j esa½	*vkofÙk*	*çfr'kr*
0.01–4230 एयर	13	5.6
4231–8460 एयर	8	3.5
8461 एयर से ऊपर	6	2.6
भूमि नही बेंची है	203	88.3
योग	230	100.0

6-7-1 % Hkfe [kjhnu okyk dh tkfr

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं से यह पूंछा गया कि आप किस जाति के है। जो भूमि खरीदी है ? प्राप्त तथ्यों से यह विदित होता है कि 29.6 प्रतिशत उत्तरदाता उच्चजाति के है। जिन्होने भूमि खरीदी है, 55.6 प्रतिशत उत्तरदाता पिछड़ीजाति के है। जिन्होने भूमि खरीदी है तथा 14.8 प्रतिशत उत्तरदाता अनुसूचितजाति के है जिन्होने भूमि खरीदी है। अतः स्पष्ट है कि आधे से अधिक उत्तरदाता पिछड़ीजाति के है जिन्होने भूमि खरीदी है। उपर्युक्त तथ्यों का क्रमबद्ध वर्णन सारिणी 6.7.1 में किया गया है।

lkfj.kh 6-7-1 Hkfe [kjhnu okyk dh tkfr

Tkkfr	vkofRr	ifr'kr
उच्चजाति	8	29.6
पिछड़ीजाति	15	55.6
अनुसूचितजाति	4	14.8
योग	27	100.0

6-7-2 % Hkfe@—f"k Hkfe cpu dk dkj.k

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं से यह पूंछा गया की आप ने या आपके परिवार में किस कारण के चलते पैतृक भूमि को बेंचा है ? प्राप्त तथ्यों से विदित होता है कि 33.3 प्रतिशत उत्तरदाता या उत्तरदाता के परिवारीजन, शादी– विवाह करने के लिए भूमि बेंची है, 11.1 प्रतिशत उत्तरदाता या उत्तरदाताओं के परिवारीजन नवीन तकनीकी कृषि यन्त्रों को खरीदने के लिए अपनी भूमि को बेंचे है, 14.8 प्रतिशत उत्तरदाता या उत्तरदाताओं के परिवारीजन भवन निर्माण कराने के लिए अपनी भूमि को बेंचे है। तथा 40.8 प्रतिशत उत्तरदाता या उत्तरदाताओं के परिवारीजन कर्ज की अदायगी, बीमारी, मुकदमा, नशाखोरी इत्यादि के कारण अपनी पैतृक भूमि को बेंचे है। अतः स्पष्ट है कि अधिकतर कृषक उत्तरदाता या उत्तरदाताओं के परिवारीजन कर्ज की अदायगी बीमारी मुकदमा, नशाखोरी इत्यादि के कारण अपनी पैतृक भूमि को बेंचे है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 6.7.2 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 6-7-2 mÙkjnkrkvks }kjk —f"k Hkfe cpu dk dkj.k

Hkfe cpu dk dkj.k	vkofÙk	çfr'kr
शादी विवाह के लिए	9	33.3
कृषि सम्बन्धी साधनों के लिए	3	11.1
मकान निर्माण के लिए	4	14.8
कर्ज की अदायगी, बीमारी, मुकदमा, नशाखोरी इत्यादि	11	40.8
योग	27	100.0

l&—f"k dk vk/kfudhdj.k :–

भारत जैसे कृषि प्रधान तथा विकासशील देश की आर्थिक प्रगति कृषि के आधुनिकीकरण पर निर्भर करती है। आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के फलस्वरूप औद्योगीकरण, मशीनीकरण, नवीन यन्त्रीकरण, नगरीकरण ने ग्रामीण समुदाय में परिवर्तन उत्पन्न किया है। नगरीय सम्पर्क की निकटता के कारण ग्रामीण समुदाय में उपभोग और उत्पादन के प्रतिमानों में महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिला है। उदीयमान नवीन तकनीकी पद्धतियों के फलस्वरूप खेती के तरीके, नवीन कृषि उपकरण, नवीन सिंचाई, उत्पादन, बाजार इत्यादि में होने वाले परिवर्तनों के फलस्वरूप कृषि उत्पादन की प्रकृति ग्रामीण आवश्यकता की पूर्ति मात्र न रहकर बाजार और नगरीय आवश्यकता की पूर्ति बन गयी है। अब ग्रामीण समुदायों में कृषक अधिकतर ऐसी फसलो को उत्पन्न करनें में रूचि रखते हैं जिससे तुरन्त रूपया प्राप्त किया जा सके। परम्परागत श्रमशक्ति पर निर्भरता कम हुई है। इसलिए वर्तमान अध्ययन में कृषि के आधुनिकीकरण का विश्लेषण किया गया है।

6-8 % —f"k lk/ku dh miyC/krk

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं से यह पूंछा गया कि आप के पास कृषि साधन के रूप में कौन–कौन से साधन उपलब्ध है। प्राप्त तथ्यों से यह विदित होता है कि 10.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास बैल उपलब्ध है। तथा 89.1 प्रतिशत उत्तरादाताओं के पास खेतों की जुताई करने के लिए बैल नही है। खेती करने के लिए 8.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पासदेशी हल हैं, तथा 91.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास देशी हल नही है। आधुनिक हल 17.4 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास है, तथा 82.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास आधुनिक हल नही है। 0.9 प्रतिशत उत्तरदाता के पास कम्बाइन मशीन है तथा 99.1 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास कम्बाइन मशीन उपलब्ध नही है। 79.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास चारा काटने की मशीन है तथा 20.4 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास चारा काटने की मशीन उपलब्ध नही है। 4. 3 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास गन्ना पेरने की मशीन है तथा 95.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं के

पास गन्ना पेरने की मशीन उपलब्ध नही है। 15.2 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास थ्रेसर मशीन है तथा 84.8 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास थ्रेसर मशीन नही है। 1.7 प्रतिशत उत्तरदाता के पास गेहूं व धान काटने की मशीन (रीपर) उपलब्ध हैं तथा 98.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास गेहूं व धान काटने की मशीन (रीपर) उपलब्ध नही हैं, 2.2 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास रोटा बेटर मशीन (आधुनिक जुताई हल) उपलब्ध हैं तथा 97.8 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास रोटा वेटर मशीन (आधुनिक जुताई हल) उपलब्ध नही है, 6.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास खेती की सिंचाई के लिए ट्यूबवेल उपलब्ध है तथा 93.5 प्रतिशत उत्तरदाता के पास ट्यूबवेल उपलब्ध नही है, 86.1 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास खेती की सिंचाई करने के लिए पम्पिंग सेट उपलब्ध है तथा 13.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास खेती की सिंचाई के लिए पम्पिंग सेट उपलब्ध नही है, 17.4 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास कृषि कार्य करने के लिए ट्रैक्टर उपलब्ध है तथा 82.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास ट्रैक्टर उपलब्ध नही हैं, 93.9 प्रतिशत उत्तरदाता फसलों पर छिड़काव के लिए स्प्रे मशीन रखे है। तथा 6.1 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास स्प्रे मशीन उपलब्ध नही हैं, 9.6 प्रतिशत उत्तरदाता के पास आधुनिक बुआई मशीन उपलब्ध है तथा 90.4 प्रतिशत उत्तरदाताओं के पास बुवाई मशीन उपलब्ध नही है। अतः स्पष्ट है कि ग्रामसभाओं में जो बड़े कृषक या जिनकी वार्षिक आय सभी वर्ग व जाति के लोगों से ज्यादा है वही लोग ग्रामसभाओं में धनी व्यक्तियों की श्रेणी में आते हैं और उन्ही के पास सर्वाधिक आधुनिक कृषि यन्त्र या कृषि करने के साधन उपलब्ध हैं। परन्तु शेष ग्रामसभा में रहने वाले कृषक इन्ही आधुनिक कृषि साधनों को किरायें पर लेकर कृषि कार्य करते हैं और एक निश्चित किराया कृषि साधन स्वामी को देते है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 6.8 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

6-9 % mÙkjnkrkvk }kjk —f"k e vk/kfud oLrqvk dk ç;kx

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं से यह पूंछा गया कि आप कृषि करने में किन–किन आधुनिक वस्तुओं का प्रयोग करते है।, प्राप्त तथ्यों से यह विदित होता है कि 84.3 प्रतिशत उत्तरदाता उनन्तशील बीज का प्रयोग करते है, 15.7 प्रतिशत उत्तरदाता उन्नतशील बीज का प्रयोग नही करते हैं, 98.3 प्रतिशत उत्तरदाता आधुनिक उर्वरक (रासायनिक खाद जैविक खाद इत्यादि) का प्रयोग करते हैं, 1.3 प्रतिशत उत्तरदाता आधुनिक उर्वरक का प्रयोग नही करते है, 91.3 प्रतिशत उत्तरदाता बीज बुआई की आधुनिक विधियो का प्रयोग करते है, 8.7 प्रतिशत उत्तरदाता बीज बुआई की आधुनिक विधियों का प्रयोग नही करते है।, तथा 100.0 उत्तरदाता फसलों को सुरक्षित रखने हेतु कीटनाशक दवा का प्रयोग करते है। केवल 21.7 प्रतिशत उत्तरदाता कम्पोस्ट खाद (गोबर की खाद) का भी प्रयोग करते हैं, 78.3 प्रतिशत उत्तरदाता कम्पोस्ट खाद (गोबर की खाद) का प्रयोग कताई कभी भी नही करते है। अतः स्पष्ट है कि उत्तरदाता कृषि के क्षेत्र में भी आधुनिकता की ओर अग्रसर हैं व हो रहे है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 6.9 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

सारिणी 6.8 : उत्तरदाताओं के पास कृषि साधन की उपलब्धता

उपलब्ध साधन	हाँ	नहीं	योग
बैल या भैसा	25 10.9	205 89.1	230 100.0
देशी हल	20 8.7	210 91.3	230 100.0
आधुनिक हल	40 17.4	190 82.6	230 100.0
कम्बाइन	2 0.9	228 99.1	230 100.0
चारा काटने की मशीन	183 79.6	47 20.4	230 100.0
गन्ना पेरने की मशीन	10 4.3	220 95.7	230 100.0
थ्रेसर(गेहूं गहाई मशीन)	35 15.2	195 84.8	230 100.0
रीपर (गेहूं व धान कटाई मशीन)	4 1.7	226 98.3	230 100.0
रोटावेटर(आधुनिक जूताई मशीन)	5 2.2	225 97.8	230 100.0
ट्यूवबेल	15 6.5	215 93.5	230 100.0
पम्पिंग सेट	198 86.1	32 13.9	230 100.0
ट्रैक्टर	40 17.4	190 82.6	230 100.0
स्प्रे मशीन	216 93.9	14 6.1	230 100.0
बुआई मशीन	22 9.6	208 90.4	230 100.0

lkfj.kh 6-9 mÙkjnkrkvksa }kjk —f"k esa vk/kfud oLrqvksa dk ç;ksx:–

i;ksx esa yh xbZ oLrq,a	*gk¡*	*Ukgha*	*;ksx*
उन्नतशील बीज	194 84.3	36 15.7	230 100.0
आधुनिक उर्वरक	226 98.3	4 1.3	230 100.0
बीज बोने की आधुनिक विधियां	210 91.3	20 8.7	230 100.0
कीटनाशक दवा	230 100.0	—	230 100.0
कम्पोस्ट खाद (गोबर की खाद)	50 21.7	180 78.3	230 100.0

6-10 % mÙkjnkrkvksa }kjk uohu —f"k ;a=ksa dk ç;ksx

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं से यह पूंछा गया कि आप कृषि कार्यों के सम्पादन में नवीन कृषि यन्त्रों का प्रयोग करते हैं ? प्राप्त तथ्यों से विदित होता है कि 90.4 प्रतिशत उत्तरदाता नवीन कृषि यन्त्रों का प्रयोग करते है. केवल 9.6 प्रतिशत उत्तरदाता ही कृषि कार्यों के सम्पादन में नवीन कृषि यन्त्रों का प्रयोग नही करते है। अतः स्पष्ट है कि लगभग सभी उत्तरदाता कृषि कार्यों के सम्पादन में नवीन कृषि यन्त्रों का प्रयोग करते है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 6.10 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 6-10 mÙkjnkrkvksa }kjk —f"k dk;Z esa uohu —f"k ;a=ksa dk ç;ksx

uohu d`f"k ;a=ksa dk i;ksx	*vkofRr*	*ifr'kr*
हाँ	208	90.4
नही	22	9.6
योग	230	100.0

6-10-1 % lkekf t d ifjoR;l ,o mRrjnkrkvk }kjk uohu —f"k ;U=k dk ç;kx

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाता नवीन कृषि यन्त्रों का प्रयोग करते है या नही, पर सामाजिक परिवर्त्यों का प्रभाव देखने के लिए संकलित तथ्यों को विश्लेषित कर सारिणी 6.10.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

vk;|

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि युवा आयु समूह के 93.5 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि कार्यों में नवीन कृषि यन्त्रों का प्रयोग करते है। तथा 6.5 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि कार्यों में नवीन कृषि यन्त्रों का प्रयोग नही करते है। मध्यम आयु समूह में 92.3 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि कार्यों में नवीन कृषि यन्त्रों का प्रयोग करते है। तथा 7.7 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि कार्यों में नवीन कृषि यन्त्रों का प्रयोग नही करते है। वृद्ध आयु समूह में 81.8 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि कार्यों में नवीन कृषि यन्त्रों का प्रयोग करते है। केवल 18.2 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि कार्यों में नवीन कृषि यन्त्रों का प्रयोग नही करते है। अतः स्पष्ट है कि कृषि कार्यों के सम्पादन में युवा आयु समूह के उत्तरदाता अपेक्षाकृत वृद्ध आयु समूह के उत्तरदाताओं के सर्वाधिक नवीन कृषि यन्त्रों का प्रयोग करते हैं तथा कृषि के क्षेत्र में आधुनिकता की ओर अग्रसर है।

f'k{kk

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की शिक्षा के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि अशिक्षित वर्ग के 68.3 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि कार्यों के सम्पादन में नवीन कृषि यन्त्रों का प्रयोग करते है, तथा 31.7 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि कार्यों के सम्पादन में नवीन कृषि यन्त्रों का प्रयोग नही करते है। प्राइमरी/जूनियर शिक्षा वर्ग के 94.2 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि कार्यों के सम्पादन में नवीन कृषि यन्त्रों का प्रयोग करते है तथा 5.8 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि कार्यों के सम्पादन में नवीन कृषि यन्त्रों का प्रयोग नही करते है। हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा वर्ग के 94.9 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि कार्यों के सम्पादन में नवीन कृषि यन्त्रों का प्रयोग करते है। तथा 5.1 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि कार्यों के सम्पादन में नवीन कृषि यन्त्रों का प्रयोग नही करते हैं। स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा वर्ग के 100.0 उत्तरदाता कृषि कार्यों के सम्पादन में नवीन कृषि यन्त्रों का प्रयोग करते है। अतः स्पष्ट हे कि उत्तरदाताओं की शैक्षणिक स्थिति के क्रमानुसार कृषि कार्यों में नवीन कृषि यन्त्रों का प्रयोग कर रहे है उदाहरणार्थ–जितना ज्यादा शिक्षित व्यक्ति उतना ही ज्यादा तीव्र गति से आधुनिकीकरण की प्रक्रिया की ओर उन्मुखता।

tkfr

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं की जाति के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि उच्चजाति के 92.9 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि कार्यों के सम्पादन में नवीन कृषि यन्त्रों का प्रयोग करते है। तथा 7.1 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि कार्यों के सम्पादन में नवीन कृषि यन्त्रों का प्रयोग नही करते है। पिछड़ीजाति के 90.2 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि कार्यों के सम्पादन में नवीन कृषि यन्त्रों का प्रयोग करते है तथा 9.8 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि कार्यों के सम्पादन में नवीन कृषि यन्त्रों का प्रयोग नही करते है। अनुसूचितजाति के 89.6 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि कार्यों के सम्पादन में नवीन कृषि यन्त्रों का प्रयोग करते है। तथा 10.4 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि कार्यों के सम्पादन में नवीन कृषि यन्त्रों का प्रयोग नही करते है। अतः स्पष्ट है कि उत्तरदाताओं की जातिगत दृष्टिकोण से कृषि कार्यों के सम्पादन में नवीन कृषि यन्त्रों का प्रयोग सर्वाधिक उच्चजाति के उत्तरदाता तथा अनुसूचितजाति से उत्तरदाता भी नवीन कृषि यन्त्रों के प्रयोग की ओर तीव्र गति से उन्मुख हो रहे हैं तथा समस्त जातियों की मनोवृत्तियों के परिवर्तन के परिणाम स्वरूप आधुनिकता की ओर उन्मुखता बढ़ रही है. उपर्युक्त तथ्यों का क्रमबद्ध वर्णन सारिणी 6.10.1 में किया गया है।

6-11 % uohu —f"k ;U=k d ç;kx d çfr :fp

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं से पूंछा गया कि आप नवीन कृषि यन्त्रों की उपयोगिता क्यो ग्रहण नही करते है? प्राप्त तथ्यों से विदित होता है कि 81.8 प्रतिशत उत्तरदाता आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण नवीन कृषि यन्त्रों की उपयोगिता को ग्रहण नही किए है, 13.6 प्रतिशत उत्तरदाता संकीर्ण मानसिकता के कारण नवीन कृषि यन्त्रों की उपयोगिता को ग्रहण नही किए है। केवल 4.6 प्रतिषत उत्तरदाता नवीन कृषि यन्त्रों की उपयोगिता को ग्रहण करने के बारे में कह नही सकते, उत्तर दिये है। अतः तथ्यों व उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण उत्तरदाता नवीन कृषि यन्त्रों की उपयोगिता ग्रहण नही कर पाये है। परन्तु उनकी मनोवृत्तियों में परिवर्तन स्पष्ट प्रतीत होता है। उपर्युक्त तथ्यों का क्रमबद्ध वर्णन सारिणी 6.11 में वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 6-10-1 lkekftd ifjoR;l ,o mÙkjnkrkvk }kjk uohu —f"k ;U=k dk ç;kx

lkekftd ifjoR;l	gk	Ukgh	;kx
vk;q			
20–35	115 93.5	8 6.5	123 100.0
36–50	48 92.3	4 7.7	52 100.0
51 से ऊपर	45 81.8	10 18.2	55 100.0
f'k{kk			
अशिक्षित	28 68.3	13 31.7	41 100.0
प्राइमरी / जूनियर	97 94.2	6 5.8	103 100.0
हाईस्कूल / इण्टरमीडिएट	56 94.9	3 5.1	59 100.0
स्नातक / स्नातकोत्तर	27 100.0	––	27 100.0
Tkkfr			
उच्चजाति	39 92.9	3 7.1	42 100.0
पिछड़ीजाति	74 90.2	8 9.8	82 100.0
अनुसूचितजाति	95 89.6	11 10.4	106 100.0
योग	208 90.4	22 9.6	230 100.0

lkfj.kh 6-11 % mÙkjknkrkvksa }kjk uohu —f"k ;U=k dh mi;kfxrk u xg.k djuk

xg.k u dju d dkj.k	*vkofRr*	*ifr'kr*
आर्थिक स्थिति की कमजोरी	18	81.8
संकीर्ण मानसिकता	3	13.6
कह नही सकते	1	4.6
योग	22	100.0

n&—f"k e njn'ku dh mi;kfxrk

भारत जैसे कृषि प्रधान देश में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया ने तकनीकी व संचार माध्यमों में बहुत तीव्र गति से प्रगति है। नित्य विज्ञान ने नये–नये अविष्कार किये व कर रहा है। दूरदर्शन विज्ञान का ही एक अद्भुत अविष्कार है। जिसमें नगरीय समुदाय व ग्रामीण समुदाय दोनों को बहुत ही प्रभावित किया है। दूरदर्शन प्रचार, शिक्षा, जनसंचार और जनजागरण का बहुत ही प्रभावी और कारगर साधन है। इसके माध्यम से कोई भी दर्शनीय घटना व तकनीकी जानकारी प्रत्येक समुदाय के घरों तक पहुँच रही है जिससे सर्वाधिक ग्रामीण समुदाय के लोग लाभान्वित हो रहे है। दूरदर्शन के माध्यम से टी0वी0 पर कृषि को अग्रणी बनाने के लिए विशेषज्ञों के कार्यक्रम सप्ताह में तीन–चार बार प्रसारित किये जाते है जिसमें विशेषज्ञ तकनीकी कृषि के गुर व फसलों को रोग से बचाने के लिए उपाय तथा वे सभी जानकारी उपलब्ध कराते है। जिसमें एक कृषक दूरदर्शन के माध्यम से तकनीकी कृषि की विशेषताओं व तरीकों को सीख कर उन्नत पैदावार कर सकें, तथा दूरदर्शन की ग्रामीण समुदाय में अत्याधिक उपयोगिता है तथा ग्रामीण समुदायों में सर्वाधिक दूरदर्शन के सभी कार्यक्रमों को देखा जाता है तथा उसी के अनुरूप ग्रामीण समुदाय के कृषक कृषि के क्षेत्र में दूरदर्शन के प्रयासों से ही आगे बढ़ रहे है। भारतीय कृषि को आधुनिकता प्रदान करने के लिए तथा तकनीकी कृषि के प्रोत्साहन के लिए केन्द्र व राज्य सरकारें कृषकों को तकनीकी कृषि करने के लिए तकनीकी कृषि यन्त्र, उन्नत बीज, रासायनिक खाद, कीटनाशक दवाओं व कृषि ऋणों व अन्य योजनाओं पर अनुदान देने व नयी–नयी कृषि जानकारी सर्वाधिक सम्पूर्ण भारत देश में दूरदर्शन के माध्यम से ही प्रसारित कराती है। जिसके फलस्वरूप ग्रामीण समुदायों में दूरदर्शन नवीन जानकारियों का सशक्त माध्यम साबित हुआ है। जिसने कृषि के क्षेत्र में गतिशीलता प्रदान की है। आधुनिकीकरण की प्रक्रिया ने अनाज, फल, सब्जी व अन्य उपजों के भन्डारण के परम्परागत तरीकों मे परिवर्तन उत्पन्न किया है जिसके तहत बड़े–बड़े शीतालय व भन्डारण गोदामों का निर्माण हुआ है। जिसमें एक कृषक अपनी उपज को कई महीनो तक

सुरक्षित रखकर उपज का उत्कृष्ट मूल्य पा सकता है। दूरदर्शन ने कृषि के परम्परागत तरीकों में परिवर्तन उत्पन्न किया है जिससे तकनीकी व वैज्ञानिक तरीकों से कृषि करने के लिए ग्रामीण समुदाय के युवा वर्ग तकनीकी व वैज्ञानिक कृषि की ओर प्रोत्साहित हो रहे हैं तथा दूरदर्शन के माध्यमों से विशेषज्ञों से जरूरत पड़ने पर सीधे दूरभाष पर निःशुल्क राय व जानकारी प्राप्त कर नवीन कृषि पद्धति को अपना रहे हैं। दूरदर्शन कृषि के अतिरिक्त समय–समय पर नवीन कुटीर उद्योगों की जानकारी भी प्रसारित करता है, जिससे पुरूष सदस्य तो प्रभावित हैं ही, ग्रामीण समुदाय की महिलाओं को भी दूरदर्शन ने प्रभावित किया है। ग्रामीण समुदाय की महिलायें भी कृषि के वैज्ञानिक तरीकों व नवीन कुटीर उद्योगों को अपना रही हैं तथा ग्रामीण समुदाय की महिलायें भी तकनीकी कृषि की ओर उन्मुख हो रही है।

वर्तमान अध्ययन के चारो ग्रामसभाओं के चुने गये उत्तरदाताओं के कृषि करने में दूरदर्शन किस प्रकार उपयोगी सिद्ध हो रहा है या नही, का विश्लेषण प्राप्त तथ्यों के आधार पर किया जा रहा है तथा दूरदर्शन की कृषि में उपयोगिता के महत्वपूर्ण तथ्यों पर प्रकाश डालने की चेष्टा की गयी है।

6-12 % Vyhfotu ij njn'ku }kjk çlkfjr —f"k dk;Øe dk n[kk tkuk

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं से पूंछा गया कि टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि कार्यक्रमों को उनके द्वारा देखा जाता है या नही ? प्राप्त तथ्यों से विदित होता है कि 60.9 प्रतिशत उत्तरदाता नियमित कृषि कार्यक्रमों को देखते है, 21.7 प्रतिशत उत्तरदाता कभी–कभी कृषि कार्यक्रमों को देखते हैं, 13.1 प्रतिशत उत्तरदाता जरूरत पड़ने पर कृषि कार्यक्रमों को देखते हैं, केवल 4.3 प्रतिशत उत्तरदाता कृषि कार्यक्रमों को कभी नही देखते है। अतः स्पष्ट है कि आधे से भी ज्यादा उत्तरदाता टेलीवीजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि कार्यक्रमों को देखते हैं। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 6.12 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 6-12 % mÙkjnkrkvksa }kjk Vyhoh tu ij njn'ku }kjk çlkfjr df"k dk;Øe dk n[kk tkuk

df"k dk;Øe dk n[kk tkuk	vkofRr	ifr'kr
नियमित देखा जाना	140	60.9
कभी–कभी देखा जाना	50	21.7
जरूरत पड़ने पर देखा जाना	30	13.1
कभी नही देखा जाता	10	4.3
योग	230	100.0

6-12-1 % lkekftd ifjoR;l ,o Vyhfotu ij njn'ku }kjk çlkfjr —f"k dk;Øek dk n[kk tkuk

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाता टेलीवीजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि कार्यक्रमों को देखते है या नही पर सामाजिक परिवर्त्यों का प्रभाव देखने के लिए प्राप्त तथ्यों को विश्लेषित कर सारिणी 6.12.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

vk;

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि युवा आयु समूह के 67.5 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि कार्यक्रमों को नियमित देखते हैं, 16.3 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि कार्यक्रमों को कभी–कभी देखते है, 11.4 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि कार्यक्रमों को जरूरत पड़ने पर देखते है,4.8 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि कार्यक्रमों को कभी नही देखते है। मध्यम आयु समूह के 63.5 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि कार्यक्रमों को नियमित देखते हैं, 15.4 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि कार्यक्रमों को कभी–कभी देखते है।, 17.3 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि कार्यक्रमों को जरूरत पड़ने पर देखते हैं, केवल 3.8 प्रतिशत उत्तरादाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि कार्यक्रमों को कभी नही देखते हैं। वृद्ध आयु वर्ग में 43.7 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि कार्यक्रमों को नियमित देखते हैं, 40.0 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि कार्यक्रमों को कभी–कभी देखते हैं, 12.7 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि कार्यक्रमों को जरूरत पड़ने पर देखते हैं, केवल 3.6 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि कार्यक्रमों को कभी नही देखते है। अतः स्पष्ट है कि सर्वाधिक उत्तरदाता युवा आयु समूह के टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि कार्यक्रमों को नियमित रूप से देखते है।

f'k{kk

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की शिक्षा के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि अशिक्षित वर्ग के 61.0 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि कार्यक्रमों को नियमित देखते है।, 14.6 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि कार्यक्रमों को कभी–कभी देखते है।, 9.8 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि कार्यक्रमों को जरूरत पड़ने पर देखते है।, 14.6 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि कार्यक्रमों को कभी नही देखते। प्राइमरी/जूनियर शिक्षा वर्ग के 66.1 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि कार्यक्रमों को नियमित देखते हैं, 19.4 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर

दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि कार्यक्रमों को कभी– कभी देखते हैं, 13.6 प्रतिशत उत्तरदाता जरूरत पड़ने पर एवं 0.9 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि कार्यक्रमों को नही देखते है। हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा वर्ग के 61.0 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि कार्यक्रमों को नियमित देखते है।, 30.5 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि कार्यक्रमों को कभी–कभी देखते है।, 6.8 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि कार्यक्रमों को जरूरत पड़ने पर देखते है केवल 1.7 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि कार्यक्रमों को कभी नही देखते है। स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा वर्ग के 40.7 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि कार्यक्रमों को नियमित देखते है, 22.3 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि कार्यक्रमों को कभी–कभी देखते है, 29.6 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि कार्यक्रमों को जरूरत पड़ने पर देखते है। केवल 7.4 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि कार्यक्रमों को कभी नही देखते है। अतः स्पष्ट है कि सर्वाधिक प्राइमरी/जूनियर शिक्षा वर्ग के उत्तरदाताओं द्वारा कृषि कार्यक्रमों को नियमित देखा जाता है।

tkfr

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की जाति के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि उच्चजाति के 71.4 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि कार्यक्रमों को नियमित देखते है।, 11.9 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि कार्यक्रमों को कभी–कभी देखते है।, 11.9 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि कार्यक्रमों को जरूरत पड़ने पर देखते है, केवल 4.8 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि कार्यक्रमों को कभी नही देखते है। पिछड़ीजाति के उत्तरदाताओं द्वारा 64.6 प्रतिशत नियमित, 18.3 प्रतिषत कभी–कभी, 9.8 प्रतिशत उत्तरदाता जरूरत पड़ने पर तथा 7.3 प्रतिशत उत्तरदाता कभी नही टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि कार्यक्रमों को देखते है। अनुसूचितजाति समूह के 53.8 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि कार्यक्रमों को नियमित देखते है, 28.3 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि कार्यक्रमों को कभी–कभी देखते है, 16.3 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि कार्यक्रमों को जरूरत पड़ने पर देखते है 1.9 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि कार्यक्रमों को कभी नही देखते है। अतः स्पष्ट है कि अधिकांशतः सभी जातियों के उत्तरदाता नियमित रूप से टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि कार्यक्रमों को देखते है परन्तु उच्चजाति वर्ग के उत्तरदाता टेलीविजन पर कृषि कार्यक्रमों को सर्वाधिक रूप से देखते है। उपर्युक्त तथ्यों का क्रमबद्ध वर्णन सारिणी 6.12.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 6-12-1 lkekftd ifjoR;l ,oa Vsyhfotu ij njn'ku }kjk çlkfjr —f"k dk;Øeksa dk ns[kk tkuk

lkekftd ifjoR;l	fu;fer ns[kk tkuk	dHkh&dHkh ns[kk tkuk	t:jr iMus ij ns[kk tkuk	dHkh ugh ns[kk tkrk	;ksx
vk;q					
20–35	83 67.5	20 16.3	14 11.4	6 4.8	123 100.0
36–50	33 63.5	8 15.4	9 17.3	2 3.8	52 100.0
51 से ऊपर	24 43.7	22 40.0	7 12.7	2 3.6	55 100.0
f'k{kk					
अशिक्षित	25 61.0	6 14.6	4 9.8	6 14.6	41 100.0
प्राइमरी / जूनियर	68 66.1	20 19.4	14 13.6	1 0.9	103 100.0
हाईस्कूल / इण्टरमीडिएट	36 61.0	18 30.5	4 6.8	1 1.7	59 100.0
स्नातक / स्नातकोत्तर	11 40.7	6 22.3	8 29.6	2 7.4	27 100.0
Tkkfr					
उच्चजाति	30 71.4	5 11.9	5 11.9	2 4.8	42 100.0
पिछड़ीजाति	53 64.6	15 18.3	8 9.8	6 7.3	82 100.0
अनुसूचितजाति	57 53.8	30 28.3	17 16.0	2 1.9	106 100.0
योग	140 60.9	50 21.7	30 13.1	10 4.3	230 100.0

6-13 % Vsyhfotu ij njn'kZu }kjk çlkfjr —f"k fo'ks"kKksa dh lq>ko dh mi;ksfxrk

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं से पूंछा गया की टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि विशेषज्ञों के सुझाव उपयोगी है। ? प्राप्त तथ्यों से यह विदित होता है कि 69.6 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि विशेषज्ञों के सुझाव से सहमत हैं, 19.6 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि विशेषज्ञों के सुझाव से असहमत है, 10.8 प्रतिशत उत्तरदाता ने टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि विशेषज्ञों के सुझाव के सम्बन्ध में कह नही सकते उत्तर दिया है। अतः स्पष्ट है कि आधे से भी अधिक उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि विशेषज्ञों के सुझाव की उपयोगिता से सहमत है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 6.13 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 6-13 Vsyhfotu ij njn'kZu }kjk çlkfjr —f"k fo'ks"kKksa ds lq>ko dh mi;ksfxrk

mi;ksfxrk	vko`fRr	izfr'kr
सहमत	160	69.6
असहमत	45	19.6
कह नही सकते	25	10.8
योग	230	100.0

6-13-1 % lkekftd ifjoR;Z ,oa Vsyhfotu ij njn'kZu }kjk çlkfjr d`f"k fo'ks"kKksa ds lq>ko dh mi;ksfxrk

वर्तमान अध्ययन से सम्मिलित उत्तरदाता में टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि विशेषज्ञों के सुझाव की उपयोगिता है या नही, पर सामाजिक परिवर्त्यों का प्रभाव देखने के लिए तथ्यों को संकलित कर सारिणी 6.13.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

vk;q

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि युवा आयु समूह के 78.9 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि विशेषज्ञों के सुझाव की उपयोगिता से सहमत हैं, 13.8 प्रतिशत

उत्तरदाता असहमत, केवल 7.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि विशेषज्ञों के सुझाव की उपयोगिता पर कह नही सकते का मत व्यक्त किया है। मध्यम आयु समूह के 63.5 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि विशेषज्ञों के सुझाव की उपयोगिता से सहमत हैं, 25.0 प्रतिशत असहमत है केवल 11.5 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि विशेषज्ञों के सुझाव की उपयोगिता पर (कह नही सकते) कोई मत व्यक्त नही कर सके। वृद्ध आयु समूह के 54.5 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि विशेषज्ञों के सुझाव की उपयोगिता से सहमत है, 27.3 प्रतिशत असहमत है तथा 18.2 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि विशेषज्ञों के सुझाव की उपयोगिता के सम्बन्ध में कोई मत व्यक्त नही कर सके है। अतः यहां स्पष्ट है कि टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि विशेषज्ञों के सुझाव की उपयोगिता से वृद्ध आयु वर्ग व मध्यम आयु वर्ग की तुलना में युवा आयु वर्ग के उत्तरदाता ज्यादा सहमत है।

f'k{kk

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की शिक्षा के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि अशिक्षित वर्ग के 58.5 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि विशेषज्ञों के सुझाव की उपयोगिता से सहमत है, 26.8 प्रतिशत असहमत है तथा 14.7 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि विशेषज्ञों के सुझाव की उपयोगिता के सम्बन्ध में कोई मत व्यक्त नही किये है। प्राइमरी/जूनियर शिक्षा वर्ग के 69.9 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि विशेषताओं के सुझाव की उपयोगिता से सहमत है।, 16.5 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत है। तथा 13.6 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि विशेषताओं के सुझाव की उपयोगिता के सम्बन्ध में कोई मत व्यक्त नही किये है। हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा वर्ग के 72.9 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि विशेषज्ञों के सुझाव की उपयोगिता से सहमत है।, 18.6 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत है। केवल 8.5 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि विशेषज्ञों की उपयोगिता के सम्बन्ध में कोई मत व्यक्त नही किये है। स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा वर्ग के 77.8 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि विशेषज्ञों के सुझाव की उपयोगिता से सहमत है तथा 22.2 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि विशेषज्ञों के सुझाव की उपयोगिता से असहमत है। अतः स्पष्ट है की अधिकांशतः सर्वाधिक शिक्षित उत्तरदाता अपेक्षाकृत कम शिक्षित उत्तरदाताओं के (तथा अशिक्षित उत्तरदाता के) टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि विशेषज्ञों के सुझावों की उपयोगिता से सहमत है।

tkfr

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की जाति के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि उच्चजाति के 73.8 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि विशेषज्ञों के सुझाव की उपयोगिता से सहमत है 14.3 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत है तथा 11.9 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि विशेषज्ञों के सुझाव की उपयोगिता के सम्बन्ध में कोई मत व्यक्त नही किये है। पिछड़ीजाति के 70.7 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि विशेषज्ञों के सुझाव की उपयोगिता से सहमत है, 19.5 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत हैं, केवल 9.8 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि विशेषज्ञों के सुझाव की उपयोगिता के सम्बन्ध में कोई मत व्यक्त नही किये है। अनुसूचितजाति के 67.0 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि विशेषज्ञों के सुझाव की उपयोगिता से सहमत है, 21.7 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत हैं तथा 11.3 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि विशेषज्ञों के सुझाव की उपयोगिता के सम्बन्ध में कोई मत व्यक्त नही किये हैं। अतः स्पष्ट है कि टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि विशेषज्ञों के सुझावों की उपयोगिता से सर्वाधिक उच्चजाति के उत्तरदाता सहमत हैं तथा पिछड़ी व अनुसूचितजाति के उत्तरदाता उच्चजाति की तुलना में कम सहमत है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 6.13.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

6-14 % Vsyhfotu ij nwjn'kZu }kjk çlkfjr —f"k mRiknksa ds foKkiuksa ls çsfjr gksuk

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं से पूंछा गया कि टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि उत्पादों के विज्ञापनों से प्रेरित होते हैं ? प्राप्त तथ्यों से विदित होता है कि 80.4 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि उत्पादों के विज्ञापनों से प्रेरित होने से सहमत है तथा 19.6 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि उत्पादों के विज्ञापनों से प्रेरित होने से असहमतता व्यक्त की है। अतः स्पष्ट है कि तीन चौथाई से ज्यादा उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि उत्पादों के विज्ञापनों से प्रेरित है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 6.14 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 6-13-1 % lkekftd ifjoR;l ,oa Vsyhfotu ij njn'ku }kjk çlkfjr —f"k fo'ks"kKksa dk lq>ko dh mi;ksfxrk

lkekftd ifjoR;l	Lkger	vlger	dg ugh ldrs	;ksx
vk;q				
20–35	97 78.9	17 13.8	9 7.3	123 100.0
36–50	33 63.5	13 25.0	6 11.5	52 100.0
51 से ऊपर	30 54.5	15 27.3	10 18.2	55 100.0
f'k{kk				
अशिक्षित	24 58.5	11 26.8	6 14.7	41 100.0
प्राइमरी / जूनियर	72 69.9	17 16.5	14 13.6	103 100.0
हाईस्कूल / इण्टरमीडिएट	43 72.9	11 18.6	5 8.5	59 100.0
स्नातक / स्नातकोत्तर	21 77.8	6 22.2	–	27 100.0
Tkkfr				
उच्चजाति	31 73.8	6 14.3	5 11.9	42 100.0
पिछड़ीजाति	58 70.7	16 19.5	8 9.8	82 100.0
अनुसूचितजाति	71 67.0	23 21.7	12 11.3	106 100.0
योग	160 69.6	45 19.6	25 10.8	230 100.0

lkfj.kh 6-14 % Vyhfotu ij njn'ku }kjk çlkfjr —f"k mRiknk d foKkiuk l çfjr gkuk

ifjr gkuk	vkofRr	ifr'kr
सहमत	185	80.4
असहमत	45	19.6
योग	230	100.0

6-14-1 % lkekftd ifjoR;l ,o Vyhfotu ij njn'ku }kjk çlkfjr —f"k mRiknk d foKkiuk l çfjr gkuk

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि उत्पादों के विज्ञापनों से प्रेरित हैं, पर सामाजिक परिवर्त्यों का प्रभाव देखने के लिए संकलित तथ्यों को विश्लेषित कर सारिणी 6.14.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

vk;q

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि युवा आयु समूह के 83.7 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि उत्पादों के विज्ञापनों से प्रेरित होने से सहमत हैं तथा 16.3 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि उत्पादों के विज्ञापनों से प्रेरित होने से असहमत है। मध्यम आयु समूह के 80.8 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि उत्पादों के विज्ञापनों से प्रेरित होने से सहमत है तथा 19.2 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि उत्पादों के विज्ञापनों से प्रेरित होने से असहमत है। वृद्ध आयु समूह के 72.7 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि उत्पादों के विज्ञापनों से प्रेरित होने से सहमत हैं तथा 27.3 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि उत्पादों के विज्ञापनों से प्रेरित होने से असहमत हैं। अतः स्पष्ट है कि अध्ययन में सम्मिलित तीन चौथाई से भी ज्यादा उत्तरदाता युवा आयु समूह के टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि उत्पादों के विज्ञापनों से प्रेरित हैं तथा कृषि उत्पादों के विज्ञापनों के प्रेरण से ही ज्यादातर आधुनिक कृषि उत्पादों का क्रय भी करते है। जो कि कृषि में आधुनिकीकरण के क्रियान्वयन का द्योतक है।

f'kf{kk

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरादाताओं की शिक्षा के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि अशिक्षित वर्ग के 75.6 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि उत्पादों के विज्ञापनों से प्रेरित होने में सहमत है। तथा 24.4 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि उत्पादों के विज्ञापनों से प्रेरित होने के प्रति असहमतता व्यक्त की है। प्राइमरी/जूनियर शिक्षा वर्ग के 84.5 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि उत्पादों के विज्ञापनों से प्रेरित होने से सहमत है। तथा 15.5 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि उत्पादों के विज्ञापनों से प्रेरित होने के प्रति असहमत है। हाईस्कूल/इण्टरमीडिएट शिक्षा वर्ग के 81.4 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि उत्पादों के विज्ञापनों से प्रेरित होने के प्रति सहमत है। तथा 18.6 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि उत्पादों के विज्ञापनों से प्रेरित होने के प्रति असहमत हैं। स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षा वर्ग के 70.4 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि उत्पादों के् विज्ञापनों से प्रेरित होने के प्रति सहमत है। तथा 29.6 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि उत्पादों के विज्ञापनों से प्रेरित होने के प्रति असहमत है। अतः स्पष्ट है कि प्राइमरी/जूनियर शिक्षा वर्ग के उत्तरदाता सर्वाधिक टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि उत्पादों के विज्ञापनों से प्रेरित है। तथा लगभग सभी उत्तरदाता आधुनिक नवीन कृषि उत्पादों का क्रय करके उपयोग कर रहे है। जो आधुनिकीकरण की प्रक्रिया का एक अंग है।

tkfr

वर्तमान अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की जाति के आधार पर तथ्यों का सहसम्बन्ध यह स्पष्ट करता है कि उच्चजाति के 69.1 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि उत्पादों के विज्ञापनों से प्रेरित होने के प्रति सहमत है। तथा 30.9 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि उत्पादों के विज्ञापनों से प्रेरित होने के प्रति अहमत है। पिछड़ीजाति के 80.5 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रस्तावित कृषि उत्पादों के विज्ञापनों से प्रेरित होने के प्रति सहमत है तथा 19.5 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि उत्पादों के विज्ञापनों से प्रेरित होने के प्रति असहमत है। अनुसूचितजाति के 84.9 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि उत्पादों के विज्ञापनों से प्रेरित होने के प्रति सहमत हैं तथा 15.1 प्रतिशत उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि उत्पादों के विज्ञापनों से प्रेरित होने के प्रति असहमत है। अतः स्पष्ट है अनुसूचितजाति के सर्वाधिक उत्तरदाता टेलीविजन पर दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि उत्पादों के विज्ञापनों से प्रेरित हैं तथा उच्चजाति व पिछड़ीजाति

के भी उत्तरदाता आधुनिक कृषि उत्पादों से प्रेरित हैं तथा नवीन उन्नत व तकनीकी उत्पादों की उपयोगिता से कृषि के क्षेत्र में परिवर्तन उत्पन्न हो रहा है। उपर्युक्त तथ्यों को सारिणी 6.14.1 में क्रमबद्ध वर्णित किया गया है।

lkfj.kh 6-14-1 lkekftd ifjoR;l ,oa Vyhfotu ij njn'ku }kjk çlkfjr —f"k mRiknksa dh foKkiuksa ls çfjr gksuk

lkekftd ifjoR;l	*Lkger*	*vlger*	*;kx*
vk;l			
20—35	103 83.7	20 16.3	123 100.0
36—50	42 80.8	10 19.2	52 100.0
51 से ऊपर	40 72.7	15 27.3	55 100.0
f'k{kk			
अशिक्षित	31 75.6	10 24.4	41 100.0
प्राइमरी / जूनियर	87 84.5	16 15.5	103 100.0
हाईस्कूल / इण्टरमीडिएट	48 81.4	11 18.6	59 100.0
स्नातक / स्नातकोत्तर	19 70.4	8 29.6	27 100.0
Tkkfr			
उच्चजाति	29 69.1	13 30.9	42 100.0
पिछड़ीजाति	66 80.5	16 19.5	82 100.0
अनुसूचितजाति	90 84.9	16 15.1	106 100.0
योग	185 80.4	45 19.6	230 100.0

l kjk'k

वर्तमान अध्ययन का मूल उद्देश्य कृषि एवं भूमि स्वामित्व को आधुनिकीकरण किस प्रकार प्रभावित कर रहा है तथा आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के फलस्वरूप परम्परागत कृषि तरीके तकनीकी व वैज्ञानिक कृषि के तरीकों में किस तरह परिवर्तित हो रहे है। का पता लगाना है। विश्लेषित तथ्यों के आधार पर प्राप्त निष्कर्षों को निम्नलिखित प्रकार से प्रस्तुत किया जा रहा है।

ग्रामसभाओं में लगभग तीन–चौथाई (78.3 प्रतिशत) उत्तरदाताओं के पास कृषि के लिए अपनी निजी भूमि है तथा एक चौथाई उत्तरदाता के पास भूमि नही है। जिन उत्तरदाताओं के पास भूमि है उनमें से आधे से अधिक उत्तरदाताओं के पास 0.01–1.2501 हेक्टेयर के लगभग भूमि है तथा उत्तरदाताओं की निजी भूमि में से लगभग 84.4 प्रतिशत कृषि योग्य भूमि है, उत्तरदाताओं की कृषि योग्य भूमि लगभग 96.1 प्रतिशत भूमि पूर्ण सिंचित है। एक चौथाई (40.0 प्रतिशत) से अधिक उत्तरदाता कृषि के लिए किराये पर भूमि लेते है। किराये पर भूमि लेने वाले उत्तरदाता 3–4 वर्ष के लिए (76.1 प्रतिशत उत्तरदाता) भूमि किराए पर लेते हैं तथा 12001 से 18000 रू0 प्रति हेक्टेयर (59.8 प्रतिशत उत्तरदाता) भूमि का वार्षिक किराया या उपज का आधा हिस्सा उत्तरदाताओं के द्वारा अदा किया जाता है। कम भूमि स्वामित्व वाले उत्तरदाता अपनी सामाजिक आर्थिक स्थिति को बनाये रखने के लिए किराये पर भूमि लेते हैं तथा अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत करने के लिए निरन्तर प्रयासरत है।

ग्रामीण समुदायों में बढ़ते हुए नगरीय सम्पर्कता के फलस्वरूप भूमि स्वामित्व के प्रतिमानों में विशेषतः परिवर्तन हुआ है, जिसके तहत उत्तरदाता भूमि का क्रय विक्रय भी करते है। जहां तक पिछले 10 वर्षों में भूमि के क्रय करने का प्रश्न है। भूमि खरीदने वालों की संख्या 8.7 प्रतिशत के लगभग है। भूमि खरीदने वाले उत्तरदाताओं नें अधिकांशतः 0.01–1.0 हेक्टेयर के लगभग भूमि खरीदी है तथा भूमि खरीदने वाले ज्यादातर पिछड़ीजाति के उत्तरदाता है। भूमि खरीदने वाले उत्तरदाताओं ने अपनी ही ग्राम में अधिकतर भूमि खरीदी है तथा भूमि खरीदने वालों में से एक चौथाई उत्तरदाताओं ने अपनें ही गांव से जुड़े दूसरे गांव में तथा कुछ उत्तरदाताओं ने दूसरे ब्लाक व नगरों में भूमि खरीदी है। इनके भूमि खरीदने का स्त्रोत अधिकांशतः चल/अचल सम्पत्ति का विक्रय करके या पुस्तैनी धन, गिरवी या अन्य साधनों के तहत भूमि की खरीददारी की है।

जहां तक पिछले दस वर्षों में भूमि बेचने का प्रश्न है भूमि बेचने वाले कुछ 5.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने लगभग 4230 एयर भूमि का विक्रय किया है। इनकी भूमि को खरीदने वालों में पिछड़ीजाति के आधे से ज्यादा उत्तरदाता सम्मिलित है। भूमि विक्रय करने वाले उत्तरदाता शादी/विवाह के लिए, कृषि सम्बन्धी साधनों, मकान निर्माण कर्ज की अदायगी, बीमारी,

मुकदमा, नशाखोरी इत्यादि के लिए भूमि का विक्रय करते है। अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण समुदायों के लोग नगरीय सम्पर्क एवं आधुनिकीकरण के प्रभाव के फलस्वरूप नवीन मांसिकताओं के परिवर्तन के कारण भूमि का क्रय–विक्रय करते है।

कृषि प्रधान तथा विकासशील देश की आर्थिक प्रगति कृषि के आधुनिकीकरण पर निर्भर है कृषि साधनों की उपलब्धता में बैल (10.9 प्रतिशत) देशी हल (8.7 प्रतिशत) आधुनिक हल (17.4 प्रतिशत) चारा काटनें की मशीन (79.6 प्रतिशत) गन्ना पेरनें की मशीन (4.3 प्रतिशत) थ्रेसर (15.2 प्रतिशत) रीपर (1.7 प्रतिशत) रोटावेटर आधुनिक जुताईमशीन (2.2 प्रतिशत) टयूवबेल (6.5 प्रतिशत) पम्पिंग सेट (86.1 प्रतिशत) ट्रैक्टर (17.4 प्रतिशत) स्प्रे मशीन (93.9 प्रतिशत) बुआई मशीन (9.6 प्रतिशत) उत्तरदाताओं के पास है। अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण समुदाय में परम्परागत कृषि यन्त्रों व साधनों की अपेक्षा आधुनिक कृषि यन्त्र व साधन अधिक मात्रा में उपलब्ध हैं तथा ग्रामीण समुदाय तकनीकी कृषि को करने के लिए परम्परागत कृषि यन्त्रों को त्याग कर नवीन तकनीकी कृषि यन्त्रों को अपनाया है। कृषि के क्षेत्र में नवीन वस्तुओं क्रमशः उन्नत बीज का प्रयोग (84.3 प्रतिशत) आधुनिक उर्वरक (98.3 प्रतिशत), बीज बोनें की आधुनिक विधियों का प्रयोग(91.3 प्रतिशत) कीटनाशक दवा का प्रयोग (100.0 प्रतिशत) हो रहा है। अतः स्पष्ट है कि कृषि के क्षेत्र में नवीन वस्तुओं का प्रयोग आधुनिकता लाने के लिए किया जा रहा है।

तकनीकी कृषि के प्रोत्साहन में दूरदर्शन का महत्वपूर्ण योगदान है, कृषि का आधुनिकीकरण तथा नवीन यन्त्रीकरण की प्रक्रिया ने प्रगति के मार्ग को दूरदर्शन द्वारा ही अग्रसरित किया गया है। उत्तरदाताओं द्वारा तकनीकी कृषि पद्धति को सीखने के लिए दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि कार्यक्रमों को (60.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं द्वारा) नियमित टेलीविजन के माध्यम के देखा जाता है। ग्रामीण समुदायों में दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि विशेषज्ञों के सुझावों से (69.9 प्रतिशत) उत्तरदाता प्रभावित है। तथा (80.4 प्रतिशत उत्तरदाता) दूरदर्शन द्वारा प्रसारित कृषि विज्ञापनों से पूर्णतः प्रेरित हैं तथा लगभग वही उत्पादों को खरीद कर प्रयोग करते है जो टेलीविजन के माध्यम से दूरदर्शन द्वारा प्रसारित किये जाते है। अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण समुदायों के लोगों को तकनीकी कृषि के गुर सीखने तथा कृषि के आधुनिकीकरण में दूरदर्शन की विशेष उपयोगिता है तथा दूरदर्शन के द्वारा ही कृषि के क्षेत्र में महत्वपूर्ण परिवर्तन हो रहा है।